तिथि–10 अप्रैल 2018
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११९
युगाब्द-५११९, अंक-९९, वर्ष-११
चैत्र वैशाख, विक्रमी २०७५ (अप्रैल 2018)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ -ऋ० १। ६। १६। ५

व्याख्यान–हे त्रैकाल्याबाध्येश्वर! (अदितिर्द्यौः) आप सदैव विनाशरहित तथा स्वप्रकाशरूप हो। (अदितिरन्तरिक्षम्) अविकृत (विकार को न प्राप्त) और सब के अधिष्ठाता हो। (अदितिर्माता) आप प्राप्तमोक्ष जीवों को अविनश्वर (विनाश–रहित) सुख देने, और अत्यन्त मान करनेवाले हो। (स पिता) सो अविनाशीस्वरूप हम सब लोगों के पिता (जनक) और पालक हो। और (स पुत्रः) सो ईश्वर आप मुमुक्षु, धर्मात्मा और विद्वानों को नरकादि दुःखों से पवित्र और त्राण (रक्षण) करनेवाले हो। (विश्वे देवा अदितिः) सब देव–दिव्यगुण विश्व का धारण रचन, मारण, पालन आदि कार्यों को करनेवाले अविनाशी परमात्मा आप ही हैं। (पञ्चजना अदितिः) पांच प्राण, जो जगत् के जीवन–हेतु, वे भी आपके रचे और आपके भी नाम हैं। (जातमदितिः) वही एक चेतन ब्रह्म आप सदा प्रादुर्भूत हैं। और सब कभी प्रादुर्भूत कभी अप्रादुर्भूत (विनाशभूत) भी हो जाते हैं। (अदितिर्जनित्वम्) वही अविनाशीस्वरूप ईश्वर आप सब जगत् का 'जनित्वम्'–जन्म का हेतु हैं, और कोई नहीं।

सम्पादकीय

भस्मासुरी वृत्ति की ओर

एक पौराणिक कथा हम सभी ने सुनी होगी कि एक राक्षस था उसने घोर तप किया उसकी तपश्चर्या से भोले बाबा प्रसन्न हो गये, उन्होंने कहा! मांगो वत्स! क्या चाहते हो? उस राक्षस ने कहा कि प्रभो मुझे वर चाहिए कि मैं जिसके भी सिर पर हाथ रखूँ वह भस्म हो जाये। भोले बाबा बोले- तथास्तु (ऐसा ही होगा)। भस्मासुर बड़ा प्रसन्न हुआ। जिस जिससे वह वैर रखता था, उस उसके सिर पर हाथ रख कर भस्म कर दिया। तब उसके मन में विचार आया कि कुछ भी शक्ति–सामर्थ्य प्राप्त करना हो तो शिवजी से करना पड़ता है और शिवजी महाराज को प्रसन्न करने के लिए घोर तप करना पड़ता है और तप भी कर लो तो जीवन बहुत थोड़े समय का है, फिर मृत्यु और मृत्यु अर्थात् संहार के देवता शिवजी हैं, सो क्यों न शिवजी को ही भस्म कर दिया जाए। अब तक वह राक्षस लोक–लोकान्तर में भस्मासुर नाम से विख्यात हो चुका था। सो विचार आया तो निकल पड़ा कैलाश की ओर। यह समाचार कैलाश पर्वत पर भोले बाबा को मिला कि–आपका चेला तो आपके ही सिर पर हाथ रखने निकल पड़ा है, सो बाबा घबराये और कोई उपाय जब न सूझा तो आप ब्रह्माजी के पास गये, ब्रह्माजी ने कहा कि- वरदान देते समय तो आपने विचारा नहीं, सो अब भोगो फल को भी। मैं तो कुछ नहीं कर सकता। तब भोले बाबा ने विष्णु जी के लोक की राह ली, त्राहि माम्–त्राहि माम् (मेरी रक्षा करो–रक्षा करो) कहते हुए विष्णुजी की शरण में पहुँचे। अब विष्णु जी ने संकट को समझा कि आज भस्मासुर शिवजी को भस्म कर देगा, लेकिन फिर भी चुप तो बैठेगा नहीं, जो खतरा आज शिवजी पर होगा कल हो न हो वह कहीं हमारी ओर चल पड़ा तो... अतः विष्णुजी ने ध्यान लगाकर उस भस्मासुर की कमजोरी को जानकर, मोहिनी रूप धारण कर नृत्य किया, भस्मासुर ने मोहिनी रूपी विष्णुजी को देखा तो वह अपना लक्ष्य भूल गया, नृत्य करने लगा। नृत्य करते–करते सिर पर हाथ रखने की मुद्रा बनाकर जब मोहिनी ने नृत्य किया, तब भस्मासुर ने भी ऐसा ही किया तो वह भस्म हो गया और संकट टल गया।

पाठकगणों! यह पौराणिक कथा है, किन्तु ऐसी वृत्ति हजारों वर्षों से लोगों में, हमारे समाज में, हमारे राष्ट्र में ही नहीं, अपितु पूरे विश्व में दृष्टिगोचर होती रहती है, जिसे हम अपनी व्यापकता की प्रसिद्धि का साधन–उपाय समझकर उपयोग करने लगते हैं, वही उपाय हमारी हानि का हथियार बनकर हम पर ही प्रहार कर बैठता है, और हम समझ पायें, इससे पूर्व ही हमारा सब कुछ भस्म हो चुका होता है, ऐसी भस्मासुरी वृत्ति वर्त्तमान में दो प्रकरणों में सामने आयी है–

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

1. सामाजिक माध्यम (सोसियल मीडिया) फेसबुक/ट्विटर के द्वारा वितरण (डाटा) चौर्य।

2. उच्चतम न्यायलय द्वारा SC/ST दलित उत्पीड़न कानून में कार्यवाही के समय सावधानी पूर्वक कार्यवाही निर्देश के विरोध स्वरूप भारत बन्द के आह्वान के साथ हिंसा।

प्रायशः हम लोग सभी फेसबुक (आमुख) का प्रयोग करते हैं, स्वाभाविक है कि- अपनी-अपनी रूचि के विषयों को संलग्न करते हैं। कुछ ऐसे भी विषय हैं, जिनसे समाज भयभीत रहता है, जैसे आतंकवाद। यह फेसबुक आदि कम्पनियां ऐसी सभी जानकारी को एकत्र कर राजनीतिक दलों को बेचकर जनता की आकांक्षा के अनुरूप प्रचार चलवाकर सरकारें बनवाने में जनता की भावना का प्रयोग करती हैं, फलस्वरूप सरकारें बन जाती हैं और गिर भी जाती हैं। लेकिन जनता की भावनाओं का कत्ल हो जाता है अर्थात् जिस सोसियल मिडिया को वरदान समझकर उपयोग करते हैं, यही भस्मासुर बनकर हमें जलाने का उपक्रम बन जाता है। यह एक उदाहरण मात्र है, जिस शोषणात्मक प्रवृत्ति को लेकर पश्चिमी दुनियाँ के द्वारा बाजारवाद की व्यवस्था खड़ी की गई है उसमें हो रहे शोषण से बच पाना सामान्य मानव के वश से बाहर है। बहुत विवेकशील व्यक्ति ही केवल उससे बच सकता है।

दूसरा जो प्रकरण हमारे सम्मुख है- वह कानून की दृष्टि से बहुत सामान्य प्रकरण है, क्योंकि ऐसा आदेश उच्च न्यायालय-उच्चतम न्यायालय अनेक कानूनों के विषय में दे चुके हैं, ऐसा ही दहेज उत्पीड़न कानून में भी हुआ है। अनेक सरकारें भी अपने स्तर पर यह प्रयास करती हैं क्योंकि स्वार्थ, अज्ञानता व दुराग्रह के कारण भी कानून का दुरुपयोग अनेक लोग करते हैं। तब ऐसी परिस्थिति में निर्दोष व्यक्ति को दण्ड न मिले, इसीलिए उच्चतम न्यायालय का यह निर्देश विवेकशीलता का परिचायक है। किन्तु भस्मासुरी वृत्ति के लोग चाहते हैं कि विवेकशीलता के लिए कहीं कोई जगह न रहे, समाज-समाज का शत्रु बना रहे, सभी वर्गों का शोषण होता रहे, चाहे युग बीत जायें। अन्यथा क्या कारण है कि स्वतन्त्रता के सत्तर वर्ष बाद भी तथाकथित जातिवादी व्यवस्था जो कर्म पर आधारित वर्णव्यवस्था के रूप में थी, वह जन्म पर आधारित ही चल रही है, अपितु एक विषाक्त रूप धारण कर चुकी है। भिन्न-भिन्न जाति उपजातियों के नाम पर नित नये-नये संगठन खड़े हो रहे हैं और एक दूसरे के विरुद्ध विषवमन कर रहे हैं। यहाँ भी स्थिति वही है कि आज जिन संगठनों को कष्ट सहकर, दुख सहकर, तपश्चर्या करके वरदान स्वरूप यह मानकर खड़ा कर रहे हैं कि ये संगठन राष्ट्र का उद्धार कर ले जायेंगे यदि वे किसी मोहिनी शक्ति के मोह में पड़ गये जिसकी संभावना ऐसे संगठानों की रहती ही है तो निश्चित ही जानिये कि हमारा समाज भस्मीभूत हो जायेगा।

आर्यों! आर्याओं! ऋषिवर दयानन्द ने तभी तो समस्त जातियों का वैर मोल लेकर भी कर्मणा वर्ण व्यवस्था को जो पूर्व ऋषियों को अभीष्ट थी, पुनर्स्थापना करने का मार्ग प्रशस्त किया था, लेकिन दुर्भाग्य कि हम अभी यह सब साकार नहीं कर पाये हैं। हमें शीघ्र ही आर्य निर्माण के प्रकल्प को और तेजी से बढ़ाकर ऋषि संकल्पों को साकार करना होगा। अन्यथा भारत बन्द होता रहेगा, लोग लड़ते रहेंगे और हम जलते रहेंगे।

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा के प्रचारकगण विभिन्न विद्यालयों में आर्य विद्या से परिचित कराते हुए

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	16 अप्रैल	दिन-सोमवार	मास-वैशाख	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-अश्विनी
पूर्णिमा	30 अप्रैल	दिन-सोमवार	मास-वैशाख	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-स्वाती
अमावस्या	15 मई	दिन-मंगलवार	मास-ज्येष्ठ	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-भरणी
पूर्णिमा	29 मई	दिन-मंगलवार	मास-ज्येष्ठ	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-अनुराधा

अवसाद-यौन उत्पीडन-आत्महत्या एवं समाधान

-आचार्य अशोक पाल

अभी दिल्ली के एक विद्यालय में 15 वर्षीय छात्रा की आत्महत्या का मामला सर्वोच्च न्यायलय में पहुंच चुका है। वहीं मुम्बई से एक और खबर आ रही है कि मायका हाई स्कूल की छात्रा ने आत्महत्या कर ली। ऐसी कितनी आत्महत्याएँ छात्र-छात्राएँ वर्ष में करते हैं? क्या आप जानते हैं? लगभग 2520 छात्र-छात्राएँ । कितने सैनिक वर्ष भर में आत्महत्या करते हैं? 100 के लगभग।

यह अवसाद का परिणाम है। एक आंकड़े के अनुसार देश की लगभग 15 प्रतिशत जनसंख्या अवसाद ग्रस्त है। चण्डीगढ में करवाये गये सर्वेक्षण के अनुसार 13-18 वर्ष के लगभग 40 प्रतिशत छात्र-छात्राएँ अवसाद ग्रस्त हैं। किसानों के बारे में न लिखुं उतना ही कम है! आज अन्नदाता भी ऋण के कारण अवसादग्रस्त है। इस लेख का विषय छात्र -छात्राओं में अवसाद, विद्यालयों में यौन उत्पीडन, आत्महत्या, हत्या एवं उसके समाधान पर विचार करना है।

आईये देखते हैं अवसाद किस बीमारी का नाम है? अवसाद या डिप्रेशन एक रोग अथवा सिंड्रोम है, जब व्यक्ति स्वयं को असहाय, लाचार, निराश अनुभव करता है। उसे सर्वत्र, सर्वदा निराशा, तनाव, अशान्ति, अरुचि प्रतीत होती है। अत्यंत गंभीर मामलों में हत्या अथवा आत्महत्या जैसे कदम उठाने में भी पीड़ित पीछे नहीं हटता। जैसे दिल्ली के ही एक विद्यालय में एक छात्र द्वारा दूसरे छात्र का सर कलम कर दिया गया। छात्रा ने एक छात्र को चाकुओं से गोदा। पर छोटे-मोटे दु:ख को अवसाद कहना उचित नहीं। यह लम्बे समय तक इच्छाओं की पूर्ति न होने के कारण उत्पन्न खीझ, घुटन कही जा सकती है। पिछले दिनों एक डी.एम. (जनपद का सबसे उच्च अधिकारी) ने अवसाद के कारण रेल से टकराकर आत्महत्या कर ली थी। आत्महत्या पूर्व उस अधिकारी ने स्वयं का विडियो बनाया था, जिसमें अवसाद के कारणों पर चर्चा की थी।

आज का समाज प्रतिस्पर्धात्मक है, प्रत्येक बालक से माता-पिता को लाखों अपेक्षायें हैं जो वे स्वयं अपने जीवन में पूरी न कर सके, वे सब अपनी सन्तानों से चाहते हैं। समाज के पास सोचने का समय नहीं है। समाज आर्थिक आधार पर निर्णय कर रहा है। सरकारे हैं कि जी.डी.पी. को ही सबका साथ-सबका विकास मानती है!

डॉक्टर, मनोवैज्ञानिक, समाज शास्त्री, दर्शन शास्त्री सब वेतन भोगी अथवा लूट का धन्धा चलाये ज्योतिष शास्त्री सबके सब एक ही थाली के चट्टे-बट्टे दिखाई पड़ते हैं। किसी को अवसाद का मूल या तो दिखाई नहीं पड़ता और दृष्टिगोचर है तो कहने तक का आत्म बल खो चुके हैं। यही कारण है कि राजनेताओं को मन की बात करनी पड़ती है! डिप्रैशन का इलाज बताना पड़ता है! पर वे भी पूरा नहीं बता पाते, राजनैतिक मजबूरी जो है। ऐसे में युवाओं! आर्यों! आर्याओं आपसे इतर किससे अपेक्षा की जा सकती है? आप ऋषि भक्त हैं, आर्य पूवर्जों के अनुगन्ता हैं। आपके पास आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय की सम्पत्ति है। ईश्वरीय उपासना से प्राप्त बल है। आपको तो सत्य-सत्य ही कहना होगा! देश की अवसाद से पीड़ित 1/6 जनसंख्या को अर्थात् 20 करोड़ आर्य सन्तानों को इस दलदल से निकालना होगा!

सत्य यही है, सामाजिक आकांक्षाओं की पूर्ति न होने के कारण ही अवसाद जन्म ले रहा है। बाल्यकाल से ही बालकों को माता-पिता, समाज, मिडिया मिलकर सब्जबाग दिखाते हैं। बालकों के समक्ष अपने सामर्थ्य, चका-चौंध का व्यापक प्रदर्शन करते हैं। आज गुरुकुल के स्थान पर स्कूल प्रतिस्थापित हैं। छात्र-छात्राओं का मन कभी भी एकाग्रचित हो पढ़ाई में लगता ही नहीं, चारों ओर ऐषणाओं का बाजार गर्म है। बाल्यकाल से ही छोटे से शरीर व मस्तिष्क पर बोझ लिए भागदौड़ शुरु! सोचने का, स्थिरता का समय हमने अपने आने वाली पीढ़ी को दिया कब? न इतिहास बताया न भविष्य का चिन्तन दिया, ऊपर से रही-सही कसर सह-शिक्षा ने पूरी कर दी। 8-10 वर्ष तक तो सामान्य चलता रहता है, फिर टी.वी. इन्टरनेट, एडवरटाईजमेंट, स्वतन्त्रता के नाम पर स्वच्छन्दता परोसती फिरती वेश्या रूपी मिडिया! छात्राओं को पढ़ाते पुरुष आध्यापक एवं छात्रों को पढ़ाती महिला अध्यापिकायें वो भी मार्डन लुक में। छेडखनी तो होनी ही थी, सो हो ही रही है।

गाँव के स्कूलों पर तालाबंदी होती है तो कोई नहीं पूछता, खाप पंचायतों की सही बात पर भी नजर टेढ़ी रखने वाला सर्वोच्च न्यायालय दिल्ली के स्कूल में छेड़खानी पर सुनवाई करेगा? बिरजू महाराज को बिटिया में डांसर दिखती है।

एषणाओं के दलदल में फंसे समाज को पंच-यम का पाठ पढ़ाकर ही अवसाद से बाहर निकाला जा सकता है। केवल मात्र हाथ-पैर हिलाने को योग कहना अपराध है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह की ओर स्वयं चलें, परिवार-समाज को चलायें और पंच नियम से रक्षा करें। शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय एवं ईश्वरप्रणिधान रूपी रक्षा कवच ही हमें अवसाद से बचावेगा।

देश को निर्णय करना है, भारत युवाओं का देश है। पर यह सत्य न बताया गया कि यह 40 प्रतिशत अवसाद ग्रस्त युवाओं का देश है। क्या इनके सहारे हम विश्व विजयी होने का स्वप्न देखेंगे या इनको ठीक किये बिना अपना विजय-रथ आगे बढ़ेगा? नहीं कदापि नहीं! आइये स्कूलों, कॉलेजों, गांवों की चौपालों, क्रीड़ास्थलों में जाकर पंचयम और पंचनियम से देश के युवाओं को अवगत करायें। सहशिक्षा रूपी राक्षसी का वध करें। वर्तमान को बचाकर ही सुनहरी भविष्य की नीवँ रखी जा सकती है। वर्तमान आपके हाथ में है। फिर अवसाद क्यों? आओ! इसे दग्धबीज करें!

संध्या काल

वैशाख मास, ग्रीष्म ऋतु, कलि-5119, वि. 2075
(1 अप्रैल 2018 से 30 अप्रैल 2018)
प्रातः कालः 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 P.M.)

ज्येष्ठ मास, ग्रीष्म ऋतु, कलि-5119, वि. 2075
(1 मार्च 2019 से 29 मई 2019)
प्रातः कालः 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 45 मिनट से (6.45 P.M.)

राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा द्वारा मनाया गया क्रान्तिकारियों का बलिदान दिवस

राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा द्वारा 18 मार्च से 25 मार्च के सप्ताह में देश भर में अनेक स्थानों पर क्रान्तिकारियों का बलिदान दिवस मनाया गया, गोष्ठियों का आयोजन किया गया जिनमें स्वतन्त्रता आंदोलन में क्रान्तिकारियों के बलिदान पर चर्चा हुई। स्वतन्त्रता आंदोलन के समय से लेकर के स्वतन्त्रता के पश्चात् अब तक स्वतन्त्रता दिलाने में क्रान्तिकारियों के योगदान को तथा-कथित इतिहासकारों व नेताओं द्वारा कम करके आंका गया है। उसके स्थान पर राजनेताओं के एक विशेष वर्ग को ही स्वतन्त्रता की प्राप्ति का सारा श्रेय दिया गया है जो कि अनुचित है। आर्य क्षत्रिय सभा द्वारा सप्ताह भर विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम व गोष्ठियों का आयोजन कर आम लोगों तक व देश के युवाओं तक क्रान्तिकारियों अर्थात् शहीद भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरु, अशफाकउल्लाह आदि समस्त क्रान्तिकारियों व उनके संगठन के योगदान को प्रस्तुत किया गया। वास्तव में स्वतन्त्रता दिलाने में इन क्रान्तिकारियों का भी बराबर का योगदान रहा है। इन कार्यक्रमों में राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के आचार्यों, प्रवक्ताओं, प्रचारकों व क्षत्रिय सभा के अधिकारियों द्वारा स्थान-स्थान पर लोगों को सम्बोधित किया गया। एक विशेषताा और यह रही कि क्योडक (कैथल) में महिलाओं के द्वारा सैकड़ों महिलाओं की सभा करके महिला आचार्यों की उपस्थिति में ही यह कार्यक्रम मनाया गया और इस प्रकार महिलाओं का भी इस प्रकार के कार्यक्रम में विशेष योगदान रहा। विस्तार भय के कारण हम यहाँ पर केवल उन स्थानों की सूची दे रहे हैं जहाँ जहाँ ये कार्यक्रम व गोष्ठियाँ आयोजित की गई जो इस प्रकार है-

- 1. टटीरी (बागपत)
- 2. किरठल (बागपत)
- 3. टीकरी (बागपत)
- 4. मेवला (बागपत)
- 5. अहेड़ा (बागपत)
- 6. बलि (बागपत)
- 7. बदरखा (बागपत)
- 8. काकड़ा (मुजफ्फनगर)
- 9. रामपुरी (मुजफ्फनगर)
- 10. जानसठ (मुजफ्फनगर)
- 11. गाँधी नगर (मुजफ्फनगर)
- 12. तालड़ा (मुजफ्फनगर)
- 13. चित्तौड़ा (मुजफ्फनगर)
- 14. मथुरा(मुजफ्फनगर)
- 15. टीला (गाजियाबाद)
- 16. निवाड़ी (गाजियाबाद)
- 17. खन्जरपुर (गाजियाबाद)
- 18. धोलड़ी (मेरठ)
- 19. डालूहेड़ा (मेरठ)
- 20. हस्तिनापुर (मेरठ)
- 21. मिठेपुर (मेरठ)
- 22. मेरठ शहर
- 23. रड़खंडी (सहारनपुर)
- 24. गजरोला (बिजनौर)
- 25. नहटोर (बिजनौर)
- 26. अहरोला (बिजनौर)
- 27. नजीबाबाद (बिजनौर)
- 28. जटपुरा (बिजनौर)
- 29. शाहजाहाँपुर
- 30. कामा (भरतपुर राज.)
- 31. जुरहेरा (भरतपुर, राज.)
- 32. पंचकुला (हरियाणा)
- 33. मेवात (हरियाणा)
- 34. खरखौदा सोनीपत (हरियाणा)
- 35. घोघडिया (जींद)
- 36. कालवन (जींद)
- 37. मोरखी (जींद)
- 38. किनाना (जींद)
- 39. फरल (कैथल)
- 40. क्योडक (कैथल)
- 41. कैथल शहर
- 42. स्त्री आर्यसमाज, क्योडक
- 43. गगसीना (करनाल)
- 44. दादूपुर (करनाल)
- 45. करनाल शहर
- 46. नलीकलां (करनाल)
- 47. बहादुरगढ़ (झज्जर)
- 48. घिटोरनी (दक्षिणी दिल्ली)
- 49. भैरा इन्कलेव पश्चिम दिल्ली
- 50. कराला उत्तर-पश्चिम दिल्ली
- 51. सैक्टर 18 रोहिणी दिल्ली
- 52. कुतबगढ (उ. प. दिल्ली)
- 53. नांगलोई (पश्चिम दिल्ली)
- 54. हथीन (पलवल, हरियाणा)
- 55. गाँव टिटोली (रोहतक)
- 56. हुडापार्क (महेन्द्रगढ़)
- 57. वेद मंदिर बरवाला (हिसार)

वैदिक विचारों का व्यापकीकरण

-आचार्य सतीश

जो विद्या, जो सिद्धान्त कभी हमारे राष्ट्र में शिक्षा के पाठ्यक्रम का हिस्सा थी, जिन सिद्धान्तों पर चलकर यहाँ लोग सर्वश्रेष्ठ जीवन यापन करते थे, जिस विद्या को धारण कर जीवन का उद्देश्य जानकर यहाँ के लोग उसकी प्राप्ति का प्रयास करते थे जिससे वे स्वयं भी सुखपूर्वक जीवन जीते थे और अन्यों को भी कष्ट नहीं पंहुचाते थे। जिस विद्या व विचारों को यहाँ के अधिकांश लोग जानते थे और उसका उपयोग करते थे, वह विद्या धीरे-धीरे हमारे पाठ्यक्रम से विलुप्त हो गई क्योंकि हजारों सालों के काल में शिक्षा व्यवस्था बदल गई। अनेक वर्षों तक हमारे पूर्वर्जों ने गुलामी झेली, शोषण झेला, युद्ध झेले तो फिर उनके सिद्धान्त उनकी विद्या सामान्य जन से दूर होती चली गई। पहले पाठ्यक्रम से अलग हुई फिर धीरे-धीरे लोगों के दैनिक जीवन से भी वे सिद्धान्त विलुप्त हो गये और वह जीवनदायनी विद्या हमारे से छिन्न-भिन्न हो गई। स्थिति हमारी यह हो गई कि हमारी अनेकों पीढ़ियों को तो यही नहीं पता कि हमारे पूवर्जों के पास ऐसी कोई श्रेष्ठ विद्या भी थी। वे सिद्धान्त हमारी दैनिकचर्या से बिल्कुल ही अलग हो गये और युवकों को यह सब पता ही नहीं रहा कि हमारे पूर्वजों के सिद्धान्त और उनकी विद्या न केवल श्रेष्ठ है अपितु वर्तमान में भी उतनी ही उपयोगी है जितनी उपयोगी पूर्व में रही है।

अगर कोई यह सोचे कि ये सिद्धान्त तो प्राचीनकाल के लिए ठीक थे, वर्त्तमान में उनकी उपयोगिता नहीं है तो यह केवल अज्ञानता है, सिद्धान्त का ठीक-ठीक न जना पाना और न जान पाना है। यदि युवाओं को उन्हीं सिद्धान्तों को वर्त्तमान के परिपेक्ष्य में बताया और समझाया जाए तो अवश्य उन्हें स्वीकार्य होगा। क्योंकि वे सिद्धान्त व विद्या सार्वकालिक व सार्वभौमिक हैं अर्थात् न समय से बद्ध हैं और न किसी क्षेत्र विशेष से। लम्बे काल से अगर कमी रही है तो यह कि युवाओं को उसकी उपयोगिता, वर्त्तमान के संदर्भ में उसका महत्व बताया ही नहीं गया। ऋषि दयानन्द की वह व्यवहारिक दृष्टि थी और उन्होंने उन सिद्धान्तों को व्यापक करना प्रारम्भ कर दिया था, अनेक लोग उस पर चल भी पड़े। लेकिन उसके बाद कुछ ही विद्वान उसको वर्त्तमान से जोड़ पाए, अधिकांश तो मात्र उसका गुणगान ही करते रह गये।

समाज समग्र रूप से सिद्धान्तों की व्यवहारिकता देखता है केवल उनकी गुणवत्ता नहीं! इसलिए ऋषियों की परम्पराओं को व्यवहार में लाने की आवश्यकता है उन सिद्धान्तों के व्यवहारिक पक्ष को सबके सम्मुख रखने की आवश्यकता है, जितना-जितना हम उसके व्यवहारिक पक्ष को मजबूत बनाते जाएंगे उतना ही उसका प्रचार-प्रसार और स्वीकार्यता होगी। लेकिन यह भी समस्या है कि जब शिक्षा पद्धति से कोई सिद्धान्त अलग हो जाते हैं तो फिर समाज में लोग उसे जानें कैसे? लोगों तक यह विद्या पहुँचे कैसे? ऋषि दयानन्द ने उसे जन सामान्य तक पहुँचाया और समाज के सामान्य वर्ग तक उन सिद्धान्तों को ले गये। उसके उपरान्त ऋषि के उनुयायियों ने अनेक गुरुकुल स्थापित कर उनमें उन सिद्धान्तों को शिक्षार्थियों को दिया। उनमें से अनेकों लोगों ने गुरुकुल से शिक्षा व वैदिक सिद्धान्त लेकर समाज को देने का प्रयास किया, कुछ सफल हुए, कुछ असफल हुए। लेकिन ऐसा कोई प्रयास, ऐसी कोई पद्धति विकसित नहीं हो पाई जो केवल समाज में सामान्य व विशेष हर प्रकार के व्यक्ति के लिए हो और वह भी इस रूप में कि सिद्धान्त व विद्या का व्यवहारिक पक्ष समाज को प्राप्त हो सके।

सौभाग्य आज हमारे पास वह पद्धति है जो इन वैदिक विचारों को जनसामान्य तक को व्यवस्थित रूप से पहुँचा सकती है। वैदिक विद्या के मूल सिद्धान्तों को जानने व जनाने के लिए व्यवस्थित पाठ्यक्रम का होना आवश्यक है। यह एक विषय है और विषय का अध्ययन या तो कक्षा में दीर्घकाल तक बैठकर हो सकता है या फिर कम काल तक कक्षा में बैठकर किसी के मार्ग निर्देशन में पाठ्यक्रम को पढ़कर हो सकता है। इसी प्रकार वैदिक विचार या विद्या एक विषय है। इनको जानने का, समझने का माध्यम या तो शिक्षण सस्थाओं की कक्षा में हो सकता है या पाठ्यक्रम की संक्षित कक्षा करके मार्ग निर्देशन में उस पाठ्क्रम का अध्ययन करने से हो सकता है। यही पद्धति अनेक विषयों की शिक्षा देने की विभिन्न विश्वविद्यालयों में है। अत: वैदिक विषय की शिक्षा भी या तो लगातार कक्षाओं में बैठकर गुरुकुल आदि शिक्षण सस्थाओं के माध्यम से हो सकती है यदि वहाँ वह विषय पढ़ाया जाए तो या फिर समय-समय पर कक्षा में बैठकर एक निर्धारित पाठ्यक्रम को अध्ययन करके हो सकती है। दूसरी विधि से शिक्षा को व्यापक किया जा सकता है जैसे दूरस्थ शिक्षा (ओपन लर्निंग) संस्थान करते हैं।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा इसी प्रकार का एक शिक्षण संस्थान है जिसका कार्य वैदिक विद्या व विचारों को जन-जन तक पहुँचाना है। पाठ्यक्रम निर्धारित है और मार्गदर्शन युवाओं को सतत् रूप से दिया जाता है। वैदिक विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए ही यह पद्धति विकसित की गई है। शिक्षण संस्थान जो नियमित रूप से इस विद्या को दे सकते हैं, वे वर्त्तमान में नहीं के बराबर हैं, तो दूरस्थ शिक्षा विधि के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों तक यह विद्या पहुँच सके ऐसा प्रयास सभा का है। लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति जो वैदिक सिद्धान्तों को जानना चाहता है, सीखना चाहता है, वह इसके पाठ्यक्रम को जान ले, वैदिक विद्या के पाठ्यक्रम को जानने का माध्यम निर्मात्री सभा द्वारा लगाया गया दो दिवसीय सत्र है। सत्र के माध्यम से पाठ्यक्रम को जानकर उसकी मूलभूत बातें सीखकर आगे और स्वाध्यय करके न केवल उस विद्या को अपने लिए उपयोगी बनाया जा सकता है अपितु समय-समय पर लगने वाली कक्षाओं में बैठकर इतनी योग्यता भी अर्जित की जा सकती है कि अन्यों को भी वह विद्या या विचार देने का सामर्थ्य अर्जित किया जा सके। और वैदिक विचार, विद्या या सिद्धान्त लेकर ही व्यक्ति आर्य बनता है। अत: यह पाठ्यक्रम और निर्मात्री सभा का निरन्तर प्रयास जन-जन तक ये विचार पहुँचाकर उन्हें आर्य बनाना है। जन-जन आर्य बने क्योंकि हम सब आर्यों के ही वंशज हैं अर्थात् हमारे पूर्वज आर्य ही थे। मनुष्य केवल शरीर धारण करने से ही मनुष्य नहीं कहलाता है वह तभी मनुष्य कहा जा सकता है जब उसमें वे गुण हों जिससे वह मनुष्य के कर्तव्यों को पूरा कर सके अर्थात् उसमें मानवोचित गुण हों। आर्यों के गुण वही हैं जो एक मनुष्य में होने चाहिएँ। आर्यत्व ही मानव की मूल योग्यता है। यदि उसमें आर्योचित्त गुण नहीं हैं तो उसके साथ अन्य विशेषण जुड़ जाते हैं। अत: आओ स्वयं आर्य बनें और जन-जन को आर्य बनावें।

आर्य प्रचारक कक्षा आर्य गुरुकुल महाविद्यालय रोहतक

आर्य प्रचारक कक्षा आचार्य गुरुकुल महाविद्यायल चित्तौड़ाझाल, मुजफ्फर नगर

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट-

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक

www.aryanirmatrisabha.com/पत्रिका पर जाएं।

01 अप्रैल-30 अप्रैल 2018 **वैशाख** ऋतु- ग्रीष्म

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
स्वाती शुक्ल पूर्णिमा 30 अप्रैल						चित्रा कृष्ण प्रतिपदा 1 अप्रैल
स्वाती कृष्ण द्वितीया 2 अप्रैल	स्वाती कृष्ण तृतीया 3 अप्रैल	विशाखा कृष्ण चतुर्थी 4 अप्रैल	अनुराधा कृष्ण पंचमी 5 अप्रैल	ज्येष्ठा कृष्ण षष्ठी 6 अप्रैल	मूल कृष्ण सप्तमी 7 अप्रैल	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण अष्टमी 8 अप्रैल
उत्तराषाढ़ा कृष्ण नवमी 9 अप्रैल	श्रवण कृष्ण दशमी 10 अप्रैल	धनिष्ठा कृष्ण दशमी 11 अप्रैल	शतभिषा शुक्ल एकादशी 12 अप्रैल	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल द्वादशी 13 अप्रैल	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल त्रयोदशी 14 अप्रैल	रेवती शुक्ल चतुर्दशी 15 अप्रैल
अश्विनी कृष्ण अमावस्या/ प्रतिपदा 16 अप्रैल	भरणी शुक्ल द्वितीया 17 अप्रैल	कृतिका शुक्ल तृतीया 18 अप्रैल	रोहिणी शुक्ल चतुर्थी 19 अप्रैल	मृगशिरा शुक्ल पंचमी 20 अप्रैल	आर्द्रा शुक्ल षष्ठी 21 अप्रैल	पुनर्वसु शुक्ल सप्तमी 22 अप्रैल
पुष्य शुक्ल अष्टमी 23 अप्रैल	आश्लेषा शुक्ल नवमी 24 अप्रैल	मघा शुक्ल दशमी 25 अप्रैल	पू॰ फाल्गुनी शुक्ल एकादशी 26 अप्रैल	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल द्वादशी 27 अप्रैल	हस्त शुक्ल त्रयोदशी 28 अप्रैल	चित्रा शुक्ल चतुर्दशी 29 अप्रैल

Rishi Dayanand - His Life And Work -Saroj Arya, Delhi

Sword in hand, the Rao rushed at the Swami and was going to strike when the latter wrested it from his hand, pressed it to the ground and broke it into two.

"I am a Sanyasi and would not pay you in the same coin. You may go now, God give you better sense to discriminate between right and wrong."

After Karan Singh had left, many of the people assembled advised Swamiji to report the matter to the police. The Swamiji thanked them for their solicitude and observed, "If the Rao did not behave like a true Kshatriya (warrior), should I too behave unlike a true Sanyasi? I am unhurt, the Rao should be wiser after this experience."

This discomfiture, however did not make the Rao wiser, it only added fuel to the fire of his hatred for the Swami. More than once he hired assassins to do away with him but fortunately these attempts were foiled every time. It, however, became known that the Rao was hatching plots against Swamiji; his good sense got the better of his hatred and he left the place.

Swamiji's enemies stooped to the meanest devices to end his life. One day when the Swami was delivering a lecture and hundreds of men and women were listening in rapt attention, a Brahmin priest rushed through the assemblage and threw a snake at him and exclaimed in a jubilant tone, "Mahadeva himself will decide today who is right, you or I."

The snake clung to Swamiji's feet. Speedily he got his feet disentangled with a single vigorous movement, crushed its head and spoke to the priest.

"Your God was rather tardy; fortunately I did not follow him. The issue is decided. Go and tell others that they should not deify false gods, but should worship the only truly Glorious Almighty."If his adversaries believed that such measures could deter him from his course of action, they knew not Dayanand. Opposition and abuse served only to stiffen his resolve. Armed with deep erudition, dialectical skill, and, above all, courage that comes with character, he was ready as never before, to denounce the superstition and practices of the day and to expose the cry of "Dharma in Danger." He realized as no one else did that it was not their Dharma but their money that had been jeopardized. Why should he be unwilling to get involved in the campaign when he took his stand on the Vedic rock? Malpractice which were eating into the vitals of the society must be condemned whatever the cost.

A great fair was held at Kakora and the Swami preached on the occasion, as usual. A large number of men came to him with the request that he should not run down idolatry and Puranas, but he heeded not. His calm but firm reply was, "What gives pleasure to you has no charm for me. I adore God and God alone and preach the same. This is what has been enjoined by the Vedas. I challenge you to prove if this is not so." There was none to take up the gauntlet and all went away in dismay.

The leaders of orthodoxy at Farrukhabad took alarm at Dayanand's ruthless campaign against puranika teaching, and called upon Pt. Sri Gopal of Meerut to take up the arms against the rebel. A shastrartha (debate for concluding truth) come off in May 1869. The Pandit quoted a verse from the Manu Smriti which according to him enjoined that idols should be worshiped. When the correct meaning of the verse was expounded by the Swami, the Pandit found it hard to uphold his position. He tried to lengthen discussion, over the meaning of that verse, but it became clear to him that he was no match for the erudite Swami.

The supporters of the Pundit found it hard to swallow the humiliation and hurried him off to Kasi whence he should make haste to obtain a verdict in favor of idol-worship. Already a Vyavastha (Dictum) had been prepared by the Pundits of Kashi when of late, a movement against idol worship had stared in the south, and Pt. Sri Gopal returned with a copy of the said document. The document contained no quotation from the Vedas authorising idol-worship and ended with spermous attacks on Swami Dayanand. It was, however , a rare treasure for Pt. Sri Gopal, who hastened to send a copy of it to Swamini. It only excited the latter's laughter, and he could not help saying,"This give me an idea of the learning of Kasi, I shall know more of it, when I reach there".

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

प्रथम बार हमारी राष्ट्रीय अस्मिता, पुरातन वैभव एवं गुलामी की दासता का व्यवहारिक अनुभव सुना। ईश्वर, धर्म, उपासना की विस्तृत व्याख्या एवं प्रायोगिक परिचय हुआ। मन उद्वेलित होकर अपराधबोध से भी भर उठा कि राष्ट्र के सम्मुख विषम एवं राष्ट्रद्रोहियों से संभावित खतरों से देश को बचाने हेतु मेरा समुचित योगदान नहीं है। नाम के साथ आर्य लगाना, आर्यसमाजी होना अलग बात है एवं सच्चा आर्य बनकर यथानाम तथाकाम को सार्थक करना ही वास्तविक आर्य है। आभारी हूँ मेरे प्रेरक व आचार्यजी का। शिविर से प्रेरणा लेकर अपने कार्य क्षेत्र में आर्य निर्माण सत्र का शीघ्र आयोजन करूंगा एवं भावी जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास करूंगा।

प्रचारक, प्रवक्ता के रूप में प्रशिक्षित होने पर सेवा कर सकूंगा, साथ ही जो सम्भव हो सकेगा करूंगा तथा आर्य निर्माण सत्रों का आयोजन करूंगा।

नामः डॉ. ललित नागर, आयुः 46, योग्यताः बी.एस.सी, बी.एच.एम.एस., पताः उज्जैन, मध्यप्रदेश

---

(1) आर्य के बारे में सही जानकारी प्राप्त हुई।
(2) पक्का आर्य समाजी बनने की प्रेरणा मिली।
(3) आर्यावर्त्त देश बनाने की इच्छा पक्की हुई।
(4) पूर्वजों के बारे में सही जानकारी मिली।
(5) आर्यावर्त्त से इण्डिया कैसे बना और अब इण्डिया से आर्यावर्त्त कैसे बनाना है इसकी रूपरेखा बताई गई।
(6) भटके हुए अपने भाईयों के शुद्धिकरण की जानकारी बढ़ानी है।
(7) नियमित संध्या एवं उपासना करने का संकल्प किया है।
(8) दुर्व्यसनी नहीं बनूंगा यह संकल्प किया।
(9) अपनी आमदनी का दसवाँ हिस्सा दान करने को बताया है इसकी पूरी कोशिश करूंगा।
(10) नागदा नगर में ऐसे लघु गुरुकुल सत्र का आयोजन वर्ष 2018 में ही करने का संकल्प लिया है।

नामः महेश कुमार सोनी, आयुः 48वर्ष, योग्यताः एम.काम., पताः नागदा, मध्यप्रदेश

मैं विकास कुमार आज इस दो दिवसीय राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के कार्यक्रम को लगाने के बाद बहुत गौरवान्वित व आनन्दित महसूस कर रहा हूँ। इस सत्र से ईश्वर, धर्म, न्याय, कर्म, मान, सम्मान इत्यादि सभी के बारे में ईश्वर की वाणी अर्थात् वेदानुसार ज्ञान प्राप्त हुआ है। इस सत्र की अहमियत व मूल्य मैं अपने शब्दों व लेख के द्वारा अगर व्यक्त करना चाहूं तो हर पेज व हर स्याही कम पड़ जाएगी क्योंकि हम यह तो जानते थे कि अज्ञान से ज्ञान की ओर को प्रकाश कहा जाता है परन्तु वह प्रकाश कैसा है, क्यों है और उसको कैसे-कहां से प्राप्त किया जा सकता है, उसकी अनुभूति मैं स्वयं कर रहा हूँ। इसके लिए मैं आचार्यजी का बहुत आभारी रहुँगा।

और इस राष्ट्र निर्माण के कार्य के लिए मुझे प्रेरित करने वाले प्रवीन मूनक का मैं हृदय की गहराइयों से बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ। वह मेरे लिए एक महत्वपूर्ण व सहयोग करने में विशेष सहयोगी रहे हैं। अंत में मेरी तरफ से आर्य निर्मात्री सभा के लिए व उसके आयोजकों को बहुत-बहुत धन्यवाद।

नामः विकास, आयुः 23 वर्ष, योग्यताः इण्टर+ डिप्लोमा, पताः गांव मुनक, जिला-करनाल, हरियाणा

मैं मनमोहन कृष्ण पुत्र श्री विजय कुमार आर्य पौत्र स्व. श्री रामशरण लाल एक आर्य समाजी परिवार में पैदा हुआ था। बाल्यकाल में जब मैं मात्र 7 वर्ष का रहा हूँगा। मेरे दादा जी ने पहली कक्षा में मुझे सजिल्द सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने को दिया था। उस समय मुझे स्वामी दयानन्द जी की बातों का मर्म समझ नहीं आया था। मेरे दादा जी ने मेरी परीक्षा भी ली थी, कृष्ण के श्लोकों का अध्याय भी पूछा था। इसके बाद दुर्भाग्य का समय आया। मेरी जननी की मृत्यु हो गयी। कुछ समय बाद दादाजी भी चल बसे। उम्र 10 साल के लगभग होगी। इसके बाद समय के झन्झावातों से जूझता हुआ स्वामी विवेकानन्द के विचारों से प्रभावित हुआ। पटना में शिक्षा ग्रहण करते समय सन् 2005 में रामकृष्ण मिशन से दीक्षित हुआ लेकिन विचारों को एक आयाम, एक विश्रांत का भाव नहीं मिला। इसी वर्ष पहली जनवरी को मैंने नास्तिक होने की घोषणा कर दी थी। लेकिन वेदों पर मेरा अखण्ड विश्वास बना रहा। राजेश कुमार आर्य की प्रेरणा से आर्य प्रशिक्षण सत्र में शामिल हुआ। इसके बाद मेरी सारी पुरानी धारणाएं छिन्न-भिन्न हो गयी। आत्मग्लानि से मन भर गया। मेरे दादाजी ने मुझे विचारों की स्वर्णिम गठरी दी थी। उम्र के 33 साल में वह खुली। मेरे जीवन के 25 साल लक्ष्यविहीन होकर व्यर्थ गये। एक नयी उर्जा और दृढ़ संकल्प के साथ आर्ष ग्रन्थों का पठन-पाठन प्रारम्भ करना शुरू कर रहा हूँ।

आर्य प्रशिक्षण सत्र जीवन के सार, अनुमान-प्रमाण, तर्क पर आधारित ज्ञान को समझाने में सहायक रहा है, जीवन को एक लक्ष्य और प्रेरणा देने वाला रहा है।

जीवनपर्यन्त आर्षग्रन्थों की साधना, आर्य बनना और बनाना जीवन का एक मात्र उद्देश्य! 28 जनवरी 2018.

नामः मनमोहन कृष्ण, आयुः 33 वर्ष, योग्यताः परास्नातक (एम.ए.), कार्यः पत्रकार, पताः नवादा, बिहार

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।